

Article By Teacher

उलझन

श्री विनोद कुमार नामा (प्राथमिक शिक्षक)



आज खामोश हूं मैं, पर कुछ कहना है
कहता हूं तो लफ़्ज़ रुक से जाते है
कहता हूं तो लब सिल से जाते है
कहता हूं तो आँखें बहने लगती है
कहता हूं तो माथे पर सिकन सी पड़ जाती है
कहता हूं तो हाथ कंपकपाने लगते हैं
कहता हूं तो गला रूंद सा जाता हैं
क्या कहूं , कैसे कहूं , किससे कहूं
बस यही सवाल अंतर्मन को झकझोर सा देता है
बस यही सवाल आँखो को रुला सा देता है
बस यही सवाल दिल को पसीज सा देता है
बस यही सवाल सांसों को तेज़ सा कर देता है
बस यही सवाल घावों को कुरेद सा देता है
बस यही सवाल धड़कन रोक सा देता है
बस यही सवाल अरमानों को तोड़ सा देता है
आज खामोश हूं मैं, पर कुछ कहना है।।